तिब्बत देश

ब्रह्मपुत्र को मोड़ने की साजिश का असली अर्थ

कुछ सप्ताह पहले भारत की नेशनल रिमोट सेंसिंग एजेंसी (एनआरएसए) ने भारत सरकार के विभिन्न विभागों के सचिवों की एक विशेष कमेटी के सामने भारतीय उपग्रहों से लिए गए कुछ चित्रों की एक ऐसी प्रेज़ेंटेशन पेश की जिसने भारत की सुरक्षा से जुड़े इन अधिकारियों को चौंका दिया। इन चित्रों में उत्तर–पूर्वी भारत–तिब्बत सीमा के पार ब्रह्मपुत्र नदी के 'ग्रेट बैंड' पर पेमाको में चीन सरकार द्वारा बनाए जा रहे नए बांध के निर्माण कार्य की गतिविधियों को विस्तार में दिखाया गया था। भारतीय भू उपग्रहों में लगे उच्च कोटि के कैमरों से लिए गए इन चित्रों में बांध स्थल पर चल रही खुदाई, सेथांग के निकट पेमाको और ज़ांग्मो में ट्रकों की आवाजाही और निर्माण कार्य की प्रगति को साफ देखा जा सकता था।

इससे पहले भी अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में ऐसे समाचार छपते रहे हैं कि चीन सरकार ब्रह्मपुत्र के पानी को मोड़कर उत्तरी और पूर्वी चीन के सूखाग्रस्त इलाको तक पानी पहुंचाने की योजना पर काम कर रही है। लेकिन हर बार चीन सरकार के नेता इन खबरों को 'मनगढ़ंत' बताकर इन्हें नकारते आ रहे थे। यहां तक कि भारत सरकार भी आधिकारित तौर पर घोषित कर चुकी थी कि उसे चीन सरकार पर ज्यादा विश्वास है लिहाजा ऐसी खबरों से परेशान होने की जरूरत नहीं है। लेकिन एनआरएसए के इन चित्रों ने भारत सरकार को चीन के प्रति अपनी अंधी आश्वस्तता पर फिर से विचार करने को मजबूर कर दिया है।

खुद चीन सरकार 1950 से यह घोषित करती आ रही है कि चीन के उत्तरी और पूर्वी इलाकों में पानी की भयंकर किल्लत का स्थायी समाधान निकालने के लिए वह तिब्बत की नदियों को मोड़कर वहां ले जाने के प्रति उत्सुक है। दुनिया भर के विशेषज्ञ इस परियोजना को 'पागलपन' की हद तक एक अति मुश्किल योजना मानते आए हैं। लेकिन चीन सरकार ने मात्र चार साल के भीतर तिब्बत में दुनिया के सबसे कठिन भूगोलिक इलाके से 1200 किमी लंबी रेलवे लाइन लाकर और दुनिया का सबसे विशाल 'थ्री गार्जेस डैम' बनाकर सिद्ध कर दिया है कि उससे किसी भी तरह के 'पागलपन' की उम्मीद की जा सकती है।

1949 में कम्युनिस्ट बगावत के माध्यम से चीन की सत्ता हथियाने और उसके तुरंत बाद तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान (नया चीनी नाम 'शिंजियांग') पर जबरन कब्जा जमाने के बाद से ही माओ ने तिब्बती नदियों को चीन में लाने की योजना घोषित कर दी थी। उस समय पश्चिमी विशेषज्ञों ने तिब्बत पर चीन के कब्जे को चेअरमैन माओ की जमीन के लिए विस्तारवारी भूख मानकर तिब्बत की ओर से आंखें मूंद ली थीं। उन्हें कभी इस बात का अंदाजा नहीं हो पाया कि तिब्बत और शिंजियांग पर कब्जा जमाने के पीछे माओ का इरादा चीन के भू–राजनीतिक प्रभाव को दूर तक ले जाने के अलावा इन दोनो देशों की अकूत खनिज संपदा और पानी का चीन के लिए दोहन करना था। उस समय के गरीब चीन के लिए ऐसी योजना का काम सर्वे से आगे कभी बढ़ नहीं पाया। लेकिन पश्चिमी देशों की मूर्खता के बूते पर अकूत धन जुटाने के बाद चीन के सामने अब धन की वे सीमाएं भी खत्म हो चुकी हैं।

दुनिया भर में ज़ांगमो के निर्माण संबंधी चित्रों के छपने के बाद अब चीन सरकार दुनिया को यह दिलासा देने में जुटी हुई है कि यह निर्माण कार्य ब्रह्मपुत्र के पानी को मोड़ने के लिए नहीं बल्कि सिर्फ वहां पानी को रोककर एक बिजलीघर बनाने के लिए चल रहा है। लेकिन जो लोग इस परियोजना की बारीकियों को जानते हैं वे जानते हैं कि इस बियाबान इलाके में बिजलीघर बनाए बिना बीजिंग, मंचूरिया और 'भीतरी' मंगोलिया (चीन द्वारा कब्जाया हुआ मंगोलिया का भाग) तक तिब्बत के पानी को ले जाने वाली विशाल परियोजना शुरू भी नहीं हो पाएगी। यहां यह जानना रोचक होगा कि जिस बिजली परियोजना की बात चीन सरकार कर रही है वह कोई छोटा–मोटा बिजलीघर नहीं बल्कि 40 हजार मेगावाट वाली परियोजना है जिसकी दुनिया में कोई बराबरी नहीं है। (भारत की सबसे बड़ी पनबिजली परियोजना भाखड़ा डैम की क्षमता केवल एक हजार मेगावाट है।)

चीन की मूल परियोजना का लक्ष्य तिब्बत की सबसे बड़ी चार नदियों सांगपो (भारतीय नाम 'ब्रह्मपुत्र'), द्रीचू (चीनी नाम 'यांग्त्सी'), ज़ाचू (अंतर्राष्ट्रीय नाम 'मेकांग' और चीनी नाम 'लांचाग जियांग') और ग्यालमो गुलचू (अंतर्राष्ट्रीय नाम 'सालवीन' और चीनी नाम नू जियांग) की दिशा को मोड़कर उन्हें तिब्बत से चीन जाने वाली पांचवीं विशाल नदी माचू (अंतर्राष्ट्रीय नाम 'येलो रिवर' और चीनी नाम 'हुआंग हे') में मिलाकर उत्तरी चीन के सूखाग्रस्त इलाकों में ले जाना है। चीन की प्रस्तवित योजना के ब्रह्मपुत्र वाले इस चरण पर कम से कम 60 अरब डालर (2 लाख 70 हजार करोड़ रु) खर्च होने का अनुमान है। चीनी वैज्ञानिकों के अनुसार ब्रह्मपुत्र की इस बिजली परियोजना से पैदा होने वाली बिजली का इस्तेमाल इस डैम के पानी को चीन की ओर पंप करने में किया जाएगा।

चीन में पिछले चालीस साल से चल रहे अंधे बाजारवादी औद्योगीकरण में जल संसाधनों और पर्यावरण का जो अंधाधुंध विनाश हुआ है उसका आलम यह है कि हर साल जानलेवा बाढ़ के लिए बदनाम येलो रिवर अब इस हद तक औद्योगिक कचरे से प्रदूषित हो चुकी है कि उसका पानी इस्तेमाल करने योग्य नहीं रहा। इसमें पानी की कमी का यह हाल है कि पिछले साल 226 दिन उसका पानी समुद्र तक पहुंचने से पहले ही सूख गया। चीन के औद्योगीगरण की गति को बनाए रखने के लिए तिब्बत की उपनिवेशवादी लूट का भी आलम यह है कि खुद चीनी आंकड़ों के मुताबिक 1959 से 1985 के बीच चीन सरकार ने तिब्बत की 54 अरब डालर (2 लाख 43 हजार करोड़ रु) की इमारती लकड़ी लूटकर विदेशों में बेची। तिब्बत में जंगलों की इस बेरहम कटाई के अलावा चीन ने तिब्बत में बेइंतहा खनिजों के दोहन, चरागाहों के विनाश, फसलों में उलटफेर, डैम और बिजली बनाने, स्थानीय जनसंख्या से कई गुना चीनी सैनिकों और चीनी नागरिकों को चीन से लाकर तिब्बत में बसाने, उनके लिए सड़कों और भवनों के निर्माण, नए उद्योग लगाने, पर्यटन बढ़ाने और पानी की बर्बादी की अन्य कई हरकतो से तिब्बत के पर्यावरण को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर दिया है। अब तिब्बत की नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को मोड़कर चीन ले जाने की इस योजना ने न केवल भारत और बांगलादेश के लिए बल्कि म्यांमार, लाओस, वियतनाम और थाईलैंड के लिए भी नया खतरा पैदा कर दिया है।

चीन के इतिहास और चीनी शासकों की नीयत को बारीकी से जानने वाले लोगों को भय है कि इन देशों की कीमत पर चीनी विकास का यह कदम इन देशों के अलावा पूरी दुनिया के लिए महंगा साबित होगा। भारत के हिमाचल प्रदेश में सतलुज और बिहार में कोसी की बाढ़ के मूल कारणों को समझने वाले जानते हैं कि वक्त आने पर चीनी शासक अपने नियंत्रण वाले बांधों का इस्तेमाल निचले देशों में सूखा पैदा करने या बाढ़ के रास्ते भयंकर विनाश लाने के हथियार की तरह करने में नहीं चूकेंगे। चीन की विनाशकारी परियोजना को रोकने में अंतर्राष्ट्रीय कानून किस हद तक काम कर पाएगा, यह तो वक्त ही बताएगा। लेकिन कानून से कहीं आगे इस समस्या का एक राजनैतिक और नैतिक पहलू यह है कि चीन यह हरकत चोरी से कम नहीं क्योंकि यह पानी एक ऐसे देश की नदियों का है जिस पर चीन ने जबरन उपनिवेशवादी कब्जा जमाया हुआ है। हर बार किसी न किसी दलील के आधार पर तिब्बत पर चीनी कब्जे को स्वीकार करने वाली विश्व बिरादरी को अब यह समझ आ जाना चाहिए कि तिब्बत पर चीन की उपनिवेशवादी हेकड़ी को नजरंदाज करने की कीमत केवल तिब्बती जनता नहीं चुका रही। इसमें अब दुनिया के विनाश के बीज के कल्ले भी फूटने शुरू हो गए हैं। पानी की दिशा बदलने की यह चीनी परियोजना इस विषवृक्ष के फैलने की पहली चेतावनी है।

– विजय क्रान्ति

दलाई लामा ने न्यूयॉर्क टाइम्स में आस्था और असहिष्णुता पर लेख लिखा

पंथ अनेक, सच एक

तेनजिन ग्यात्सो (परम पावन दलाई लामा)
24 मई, न्यूयॉर्क टाइम्स

उग्र नास्तिक लोग धार्मिक विश्वास रखने वालों की आंख मूंदकर आलोचना करते हैं। मध्य पूर्व में विभिन्न पंथों से जुड़े लोगों के बीच घृणा की वजह से ही युद्ध की लपटें भड़कती रही हैं।

जब मैं तिब्बत में एक बच्चा था तो मुझे लगता था कि मेरा बौद्ध धर्म ही सबसे अच्छा है और दूसरे धर्म इससे कुछ निम्न कोटि के हैं। आज मुझे लग रहा है कि मैं कितना भोला था और आज किसी धार्मिक असहिष्णुता की अति कितनी खतरनाक हो सकती है।

हालांकि, असहिष्णुता भी उतनी ही पुरानी है जितने कि स्वयं धर्म, लेकिन हम अब भी इसकी कड़वाहट के लक्षण देख रहे हैं। यूरोप में आने वाले नए लोगों के बुर्का पहनने या मीनारें खड़ी करने को लेकर गहन बहस चल रही है और वहां मुस्लिम प्रवासियों के खिलाफ हिंसा की कई घटनाएं हुई हैं। उग्र नास्तिक लोग धार्मिक विश्वास रखने वालों की आंख मूंदकर आलोचना करते हैं। मध्य पूर्व में विभिन्न पंथों से जुड़े लोगों के बीच घृणा की वजह से ही युद्ध की लपटें भड़कती रही हैं।

इस प्रकार का तनाव और बढ़ता ही दिख रहा है क्योंकि दुनिया एक–दूसरे से अब ज्यादा जुड़ गई है और संस्कृति, लोग और धर्म अब एक–दूसरे से ज्यादा गुंथित हो गए हैं। इन सबसे जो दबाव बना है वह हमारे सहनशीलता की ज्यादा परीक्षा ले रहा है। इससे इस बात की जरूरत बढ़ी है कि हम शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ावा दें और सभी देशों के लोगों में समझ बढ़ाने का प्रयास करें।

कुछ हद तक हर धर्म में अपनी मुख्य पहचान के हिस्से के रूप में एक अलगाव की भावना होती है। फिर भी मेरा मानना है कि पारस्परिक समझ की वास्तविक संभावना है। अपनी परंपरा के पंथ के संरक्षण के साथ ही कोई व्यक्ति दूसरी परंपराओं का भी सम्मान, तारीफ और आदर कर सकता है।

मेरे लिए सबसे पहले आंख खोलने वाली बात थी भारत में ट्रैपिस्ट संत थॉमस मेर्टन से मुलाकात जो 1968 में उनकी कुसमय मौत से कुछ दिनों पहले ही हुई थी। मेर्टन ने मुझे बताया कि वह इसाइयत के प्रति पूरी तरह आस्था रखते हैं, लेकिन बौद्ध जैसे अन्य धर्मों का भी गहन अध्ययन करते हैं। मेरे मामले भी यही सच है। एक प्रबल बौद्ध होने के बावजूद दुनिया के अन्य सभी महान धर्मों का अध्ययन कर रहा हूं।

इस मुलाकात की मुख्य बात मेर्टन से मेरी यह चर्चा थी कि किस प्रकार इसाइयत और बौद्ध, दोनों का मुख्य संदेश करुणा है।

न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन से मैंने पाया कि मैं ईसा मसीह के करुणामयी कार्यों से प्रभावित हो गया हूं। लोएव्स और मछलियों का उनका चमत्कार, उनके उपचार और उनके सभी कार्य इस इच्छा से प्रेरित होते थे कि पीड़ितों को राहत मिले।

मेरा इस ताकत में दृढ़ता से भरोसा है कि व्यक्तिगत संपर्क से मतभेदों को कम किया जा सकता है, इसलिए मैं लंबे समय से दूसरे धार्मिक विचारों वाले लोगों से संवाद बढ़ाने का इच्छुक रहा हूं। मेर्टन और मैंनें जिस करुणा को दोनों धर्मों के केंद्र के रूप में पाया, वह मुझे सभी प्रमुख पंथों को जोड़ने वाला एक मजबूत धागा लग रहा है। इन दिनों हमें इस बात को रेखांकित करने की जरूरत है कि हमें कौन सी बात जोड़ती है।

मैं यहूदी धर्म का उदाहरण लेता हूं। मैं सबसे पहले भारत में 1965 में एक सिनगॉग देखने गया था और मैं इसके बाद के सालों में कई रब्बी (यहूदी गुरुओं) से मिला हूं। मुझे नीदरलैंड में एक रब्बी से मुलाकात अब भी अच्छी तरह याद है जिन्होंने मुझे होलोकॉस्ट (यहूदियों

के संहार) की बातें ऐसी मार्मिकता से बताईं कि हम दोनों की आंखों में आंसू आ गए। और मुझे याद आया कि किस प्रकार टालमुड और बाइबिल दोनों में बार–बार करुणा की बात की गई है, जैसे कि लेविटिकस के उद्धरण में फटकार लगाते हुए कहा गया है, "अपने पड़ोसियों से भी उतना ही प्यार करो जितना खुद से करते हो।"

भारत में हिंदू विद्वानों से कई बार चर्चा के दौरान मैंने यह पाया है कि हिंदुत्व का मूल भी निस्वार्थ करुणा की भावना है, जैसा कि भगवद् गीता में कहा गया है, जो उन लोगों की तारीफ करता है "जो सबके कल्याण में खुशी महसूस करते हैं।" मेरा मानना है कि महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों या बाबा आमटे जैसे लोगों के जीवन में भी इसी मूल्य की अभिव्यक्ति हुई है। बाबा आमटे ने भारत के महाराष्ट्र राज्य में एक तिब्बती बस्ती के नजदीक कुष्ठ आश्रम की स्थापना की है। वहां वे ऐसे कुष्ठ रोगियों को आश्रय और भोजन देते हैं जो उपेक्षित पड़े हुए थे। जब मैंनें नोबेल शांति पुरस्कार हासिल किया तो इस आश्रम को भी कुछ दान दिया।

इस्लाम में भी करुणा का उतना ही महत्व है, और इसे स्वीकार करना 11 सितंबर के बाद के सालों में और भी महत्वपूर्ण हो गया है, खासकर उन लोगों को जवाब देने के लिए जो इस्लाम को एक लड़ाकू धर्म के रूप में चित्रित करना चाहते हैं। 11 सितंबर के हमलों की पहली वर्षगांठ पर मैंने वाशिंगटन के नेशनल कैथेडरल में भाषण देते हुए कहा था कि हमें मीडिया में छप रही सभी बातों के पीछे आंख मूदकर नहीं चलना चाहिए और कुछ लोगों की हिंसक कार्रवाई को पूरे धर्म से जोड़कर नहीं देखना चाहिए।

मैं इस्लाम के बारे में अपनी कुछ जानकारी आप तक पहुंचाना चाहता हूं। तिब्बत में करीब 400 साल तक इस्लामी समुदाय का प्रभाव रहा है, इसके बावजूद इस्लाम से मेरा सबसे अच्छा संपर्क भारत में हुआ है, जहां दुनिया में दूसरी सबसे ज्यादा मुस्लिम जनसंख्या रहती है। लद्दाख के एक ईमाम ने मुझे एक बार बताया था कि एक सच्चे मुसलमान को अल्लाह के रचे हुए सभी प्राणियों से प्यार और सम्मान करना चाहिए। जहां तक मेरी समझ है, इस्लाम में भी करुणा ही मुख्य आध्यात्मिक सिद्धांत है जो उनके ईश्वर के नाम "अल्लाह" यानी करुणामय और दयावान से ही प्रदर्शित होता है जो कुरआन के हर अध्याय की शुरुआत में अंकित है।

विभिन्न पंथों में साझे आधार की तलाश से हमें ऐसे समय में बेकार के बंटवारे को पाटने में मदद मिलेगी जब एक होकर कार्य करना इतना महत्वपूर्ण हो गया जितना पहले कभी नहीं था। एक प्राणी के रूप में हमें मानवता की एकता को निश्चित रूप से अपनाना चाहिए क्योंकि आज हमारे सामने आर्थिक संकट, पारिस्थितिकीय विनाश जैसे कई अंतरराष्ट्रीय मसले हैं। इन सबके लिए हमें एक होकर कार्य करना होगा।

हमारी दुनिया में शांतिपूर्ण सहयोग के लिए सभी प्रमुख पंथों के बीच शांति एक महत्वपूर्ण जरूरत बन गई है। इस लिहाज से विभिन्न परंपराओं के बीच पारस्परिक समझ बढ़ाने की जरूरत सिर्फ धर्म को मानने वालों की ही नहीं, बल्कि यह पूरे मानवता के कल्याण के लिए जरूरी है।

(तेनजिन ग्यात्सो, 14वें दलाई लामा ने हाल में एक पुस्तक *टुवर्ड्स अ ट्रू किनशिप ऑफ फेथ्सः हाउ द वर्ल्ड्स रिलीजंस कैन कम टुगेदर* लिखी है)

भारत में हिंदू विद्वानों से कई बार चर्चा के दौरान मैंने यह पाया है कि हिंदुत्व का मूल भी निस्वार्थ करुणा की भावना है, जैसा कि भगवद् गीता में कहा गया है, जो उन लोगों की तारीफ करता है "जो सबके कल्याण में खुशी महसूस करते हैं।"

मेकांग नदी के सिमटने की जिम्मेदारी लेने से चीन का इनकार

(बीजिंग, एपी, 1 अप्रैल)

चीन ने बुधवार को इस बात से इनकार किया है कि मेकांग नदी के जल का "अपहरण" करने में उसकी कोई जिम्मेदारी है। गौरतलब है कि पिछले 20 साल में दक्षिण–पूर्व एशिया में निचले धाराओं वाले क्षेत्र में मेकांग का अब सबसे कम जलस्तर रह गया है।

चीन के जल संसाधन विभाग के उप मंत्री लिउ निंग का कहना है कि चीन के बांधों और ऊपरी जल स्तर पर बनने वाले बांधों से वास्तव में सूखे के प्रभावों से बचने में मदद मिली है। हालांकि यह बात साफ नहीं हो पाई कि वह सिर्फ दक्षिण पश्चिम चीन के सूखाग्रस्त क्षेत्रों की बात कर रहे हैं या समूचे व्यापक क्षेत्र की। तिब्बत के पठार से निकलने वाली मेकांग नदी पिछले दो दशक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है जिसकी वजह से दक्षिण पूर्व एशिया में जलमार्ग से होने वाली माल ढुलाई बाधित हो गई है।

मेकांग नदी आयोग के अनुसार कंबोडिया, चीन, लाओस, म्यांमार, थाइलैंड और वियतनाम के करीब 6.5 करोड़ लोगों की जीविका जलमार्गों में कार्गो ट्रैफिक से ही चलती है।

कई गैर सरकारी संस्थाएं लंबे समय से यह आरोप लगाती रही हैं कि चीन की वजह से ही मेकांग नदी सिमट रही है और पारिस्थिति को भारी नुकसान हो रहा है। चीन ने इस नदी की उपरी जलधाराओं में कई बांध बनाए हैं और कई और बांध बनाने की उसकी योजना है।

करीब 6.5 करोड़ लोगों की जीविका जलमार्गों में कार्गो ट्रैफिक से ही चलती है। कई गैर सरकारी संस्थाएं लंबे समय से यह आरोप लगाती रही हैं कि चीन की वजह से ही मेकांग नदी सिमट रही है और पारिस्थिति को भारी नुकसान हो रहा है।

दलाई लामा के निधन के साथ नहीं खत्म होगा तिब्बत मसलाः प्रतिनिधि

(एएफपी, 2 अप्रैल, टोक्यो)

चीनी शासन के तहत वृहद तिब्बत का अधिकार हासिल करने का आंदोलन दलाई लामा के निधन के बाद भी जारी रहेगा, आध्यात्मिक नेता के एक वरिष्ठ दूत ने जापान में यह बात कही। साल 1959 में अपने हिमालयी मातृभूमि को छोड़कर भारत में बस जाने वाले बौद्ध भिक्षु के मुख्य प्रतिनिधि तेम्पा सेरिंग ने कहा, "हमारी यह दृढ़ रूप से मानना है कि तिब्बत का मसला खत्म नहीं होगा।"

कई तिब्बती जानकारों का मानना है कि चीन दलाई लामा के निधन का इंतजार कर रहा है ताकि वह उनकी जगह खुद के दलाई लामा को बिठा सके। चीन की इस बारे में टिप्पणियों को खारिज करते हुए सेरिंग ने दलाई लामा के इस बयान को उद्धत किया कि, "उनका पुनर्जन्म एक आज़ाद समाज में होगा, न कि एक बंद समाज में।" उन्होंने कहा कि साल 2008 में हुआ आंदोलन युवा पीढ़ी के द्वारा किया गया था और निर्वासित तिब्बतियों के बीच भी ऐसी युवा पीढ़ी है जो ज्यादा समर्पित है। वे सामने आ रहे हैं।

भारत सरकार ने करमापा की यूरोप यात्रा को मंजूर नहीं किया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 6 अप्रैल)

17वें ग्यालवांग कर्मापा ओग्येन त्रिनले दोर्जी की अगले महीने होने वाली यूरोप यात्रा रद्द कर दी गई है क्योंकि भारत सरकार ने उनकी 27 मई से 2 जुलाई, 2010 तक के यात्रा कार्यक्रम को मंजूरी नहीं दी है। यात्रा के दौरान 9 देशों में करमापा को कई जगह उपदेश, व्याख्यान और दीक्षा देना था।

इस यात्रा के लिए बनाए गए एक वेबसाइट पर यात्रा के समन्वयक रिंगू टुल्कु ने लिखा है कि निर्वासित तिब्बती सरकार के द्वारा इस निर्णय की जानकारी कागयू ऑफिस को मिली।

स्विट्जरलैंड की न्यूज एजेंसी ने किया तिब्बत पर डॉक्यूमेंट्री का प्रसारण

(फायूल डॉट कॉम, 6 अप्रैल, जेनेवा)

स्विट्जरलैंड की ऑनलाइन न्यूज एजेंसी स्विसइंफो डॉट सीएच ने स्विट्जरलैंड में तिब्बती शरणार्थियों के पहुंचने की 50वीं वर्षगांठ पर एक डॉक्युमेंट्री कीपिंग टिबेटन कल्चर अलाइव का प्रसारण किया। करीब 5 मिनट की इस फिल्म के बारे में बताते हुए जूलिया हंट ने कहा, यूरोप में सबसे ज्यादा करीब 4,000 तिब्बती समुदाय के लोग स्विट्जरलैंड में रहते हैं।

साल 1959 में चीनी आक्रमण के बाद उन्हें अपने घर से भागना पड़ा था। अपने यहां आगमन की 50वीं वर्षगांठ पर अब वे अपने अध्यात्मिक नेता दलाई लामा के दौरे की तैयारियों में लगे हैं।

कीपिंग टिबेटन कल्चर अलाइव में फुर्ताग परिवार को दिखाया गया है जो तिब्बत में तीन पीढ़ियों से रह रहे हैं। उनके तीन बेटे अपने रॉक बैंड की तैयारियों में लगे हैं। इन बच्चों की मां नॉरजॉम फुर्ताग से जब तिब्बत के भविष्य के बारे में पूछा जाता है तो वह काफी भावुक होकर कहती हैं, मेरा यह गंभीरता से मानना है कि एक दिन हम तिब्बत जरूर लौटेंगे, इस

जन्म में नहीं तो अगले जन्म में सही।

चीन के हैकरों ने चुराए भारतीय सीक्रेट

(एपी, 7 अप्रैल, 2010)

चीन के हैकरों ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी जानकारी, दलाई लामा के ऑफिस से 1,500 ई–मेल और कई अन्य संवदेनशील दस्तावेज चुरा लिए हैं। मंगलवार को जारी एक नई रिपोर्ट से इसका खुलासा हुआ है।

रिपोर्ट ने शैडो नेटवर्क नामक उस हैकिंग ऑपरेशन के बारे में बताया है जिस तक टोरंटो यूनिवर्सिटी के सिटिजन लैब के रिसर्चर पहुंच सके। रिपोर्ट के अनुसार चीनी हैकरों ने काबुल, मास्को आदि कई जगहों के भारतीय दूतावासों के कंप्यूटरों में सेंधमारी कर कई तरह की जानकारियां इकट्ठा कर ली थीं। रिपोर्ट के अनुसार कनाडाई रिसर्चर को पता चला है कि भारतीय कंप्यूटरों से हैकरों ने जो जानकारी हासिल की वह सीक्रेट और कांफिडेंशियल था। इसमें से एक जानकारी भारत की उत्तर पूर्व की चीनी सीमा पर सुरक्षा से जुड़ी थी। अन्य जानकारियां भारत के मध्य–पूर्व, अफ्रीका और रूस से जुड़ी थीं।

अमेरिकी परमाणु सम्मेलन में चीन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

(एएफपी, 13 अप्रैल, वाशिंगटन)

गीत गाते दर्जनों तिब्बतियों और शांतिपूर्व ध्यान लगाए फालुनगांग के अनुयाइयों ने यहां सोमवार को परमाणु सुरक्षा सम्मेलन के अवसर पर जुटे दुनिया भर के नेताओं के समक्ष चीन के खिलाफ प्रदर्शन किया। वाशिंगटन के चाइना टाउन के एक चौराहे और पार्क में जुटे 100 से ज्यादा तिब्बतियों ने जमकर नारे लगाए। यह दोनो जगह वाशिंगटन के उस कन्वेंशन सेंटर से एक फर्लांग की दूरी पर ही हैं जहां राष्ट्रपति बराक ओबामा चीन के राष्ट्रपति हू जिनताओ सहित दुनिया के 46 देशों के नेताओं की मेजबानी कर रहे हैं।

दलाई लामा ने हिमाचल प्रदेश को अपना दूसरा घर बताया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 30 अप्रैल)

तिब्बत के निर्वासित आध्यात्मिक नेता परम पावन दलाई लामा ने शुक्रवार को कहा कि वह और बड़ी संख्या में तिब्बती नागरिक हिमाचल प्रदेश में इतने समय से रह रहे हैं कि यह उनके लिए दूसरा घर बन गया है।

दलाई लामा ने 50 साल पहले उत्तर भारत के धर्मशाला में अपने निर्वासित होकर आगमन को याद करने के लिए आयोजित एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा, पिछले 50 साल से हिमाचल प्रदेश व्यावहारिक रूप से हमारा दूसरा घर बन गया है जहां हमें अपनी जिम्मेदारियों को निभा सकने लायक पूरी आज़ादी मिली है।

गौरतलब है कि साल 1959 में तिब्बत पर चीनी हमले और चीन शासन के विरुद्ध जनक्रांति असफल हो जाने के बाद दलाई लामा निर्वासित होकर भारत आ गए थे जिसके बाद से ही धर्मशाला निर्वासित तिब्बती सरकार का केंद्र बन गया है।

तिब्बत में आए भूकंप से 600 से ज्यादा लोग मारे

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 15 अप्रैल)

बुधवार को तिब्बत के युशु काउंटी में आए भूकंप में मरने वालों की संख्या बढ़कर 617 हो गई है। युशु काउंटी को ही तिब्बत के परंपरागत प्रांत खम में केगुदो के रूप में जाना जाता है। चीन की सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी है। हालांकि, अपुष्ट सूत्रों ने यह बताया है कि मरने वालों की संख्या और भी ज्यादा हो सकती है।

भूकंप वाले क्षेत्रों से बात करने वाले कुछ निर्वासित तिब्बती लोगों ने भी ऐसी ही जानकारी दी है। एक निर्वासित तिब्बती नागरिक ने अपने गांव के लोगों से बात कर बताया कि भूकंप से मरने वालों की संख्या 3000 तक हो सकती है।

दलाई लामा ने भूकंप पीड़ित क्षेत्र में जाने की इच्छा जताई

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 16 अप्रैल)

तिब्बती नेता परम पावन दलाई लामा ने क्विंघई प्रांत के भूकंप प्रभावित क्षेत्र के दौरे की गहरी इच्छा जताई है। परम पावन ने कहा है कि भूकंप में मरने वाले लोगों के पीड़ित परिवारों के साथ वह प्रार्थना करना चाहते हैं और उन्हें सांत्वना देना चाहते हैं। तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के कार्यालय द्वारा जारी बयान में कहा गया है, हम लोगों के बीच बनी भौतिक दूरी की वजह से फिलहाल मैं पीड़ित लोगों को सीधे सांत्वना देने में अपने को असमर्थ पा रहा हूं, लेकिन मैं उनके लिए प्रार्थना करना चाहता हूं।

रिपोर्ट के अनुसार चीनी हैकरों ने काबुल, मास्को आदि कई जगहों के भारतीय दूतावासों के कंप्यूटरों में सेंधमारी कर कई तरह की जानकारियां इकट्ठा कर ली थीं। रिपोर्ट के अनुसार कनाडाई रिसर्चर को पता चला है कि भारतीय कंप्यूटरों से हैकरों ने जो जानकारी हासिल की वह सीक्रेट और कांफिडेंशियल था।

चीन के बांध से उत्तर–पूर्व में बढ़ेगी बाढ़ की विनाशलीला

(टीएनएन, 24 अप्रैल, गुआहाटी)

ब्रह्मपुत्र के उपरी सिरे पर जलविद्युत परियोजना बनने को लेकर उत्तर–पूर्व में बढ़ती आशंकाएं सच साबित हुई हैं। चीन सरकार ने यह स्वीकार किया है कि वह तिब्बत में उस जगह पर एक बांध बना रहा है जहां से ब्रह्मपुत्र नदी निकल कर भारत की ओर आती है। भारत के विदेश मंत्री एस एम कृष्णा की बीजिंग यात्रा के दौरान चीनी अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है कि तिब्बत के जांगमू क्षेत्र में एक जलविद्युत परियोजना का निर्माण हो रहा है।

कृष्णा ने बताया कि चीन के विदेश मंत्री ने उन्हें यह भरोसा दिया है कि यह परियोजना काफी छोटी आकार की है जिसकी वजह से इसका भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र के निचले इलाकों में रहने वाले लोगों पर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन चीन के इस दावे के विपरीत यहां के कई जानकारों का कहना है कि यारलुं सांगपो (कैलाश पर्वत से निकलने वाली ब्रह्मपुत्र नदी को तिब्बत में यारलुंग सांगपो के नाम से ही जाना जाता है) पर यह ऐसी कई परियोजनाओं की शुरुआत ही है।

ताइवान के प्रमुख वायु सेना केंद्रों पर हमले का जवाब किस तरह से दिया जाएगा और इस तरह के हमलों से निपटने के लिए सेना कितनी तैयार है। इस अभ्यास में सैकड़ों जवान शामिल थे। कुछ जवान बुलडोजर, हाइड्रॅलिक शोवल्स और बम डिस्पोजल इंजन जैसे भारी इंजीनियरिंग इक्विपमेंट संचालित कर रहे थे।

ताइवान की सेना चीनी वायु हमले के लिए तैयार

(एएफपी, 28 अप्रैल, हुवालीन, ताइवान) ताइवान की सेना ने मंगलवार को इस रहस्य से पर्दा उठाया कि वह चीन के भारी हवाई हमले का जवाब किस तरह से देगी। इससे यह पता चलता है कि दोनों देशों के बीच रिश्ते सुधरने के बावजूद यह द्वीप देश चीनी हमले की संभावना को काफी गंभीरता से लेता है।

पत्रकारों को पहली बार यह दिखाने के लिए आमंत्रित किया गया कि ताइवान के प्रमुख वायु सेना केंद्रों पर हमले का जवाब किस तरह से दिया जाएगा और इस तरह के हमलों से निपटने के लिए सेना कितनी तैयार है। इस अभ्यास में सैकड़ों जवान शामिल थे। कुछ जवान बुलडोजर, हाइड्रॅलिक शोवल्स और बम डिस्पोजल इंजन जैसे भारी इंजीनियरिंग इक्विपमेंट संचालित कर रहे थे। सैन्य विश्लेशकों का कहना है कि ताइवान पर यदि कोई चीनी हमला होता है तो लगातार बमबारी से नागरिकों और सैन्य हवाई अड्डों, प्रमुख सरकारी इमारतों को नष्ट किया जा सकता है और यातायात व्यवस्था चरमरा सकती है। जापानी मीडिया के अनुसार ताइवान के इस अभ्यास से पहले एक चीनी बेड़े ने जिसमें दो पनडुब्बियां और आठ अन्य जहाज थे, ओकिनावा के पास पूर्वी चीन सागर में अभ्यास किया और इसके बाद वे प्रशांत महासागर की ओर बढ़ गए।

दलाई लामा स्लोवेनिया की यात्रा पर गए

(एएफपी, मारिबोर, 6 अप्रैल)

तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा सोमवार को स्लोवेनिया के दूसरे शहर मारिबोर पहुंचे। चीन उनकी इस यात्रा का विरोध कर रहा था और उसे लगता है कि देश के शीर्ष अधिकारी दलाई लामा से नहीं मिलेंगे। दलाई लामा के होटल पहुंचने पर शहर के मेयर फ्रांक कांगलेर, स्लोवेनियाई संसद के सदस्य इवो वाजगल और करीब 200 अन्य नागरिकों ने उनका स्वागत किया। वह शहर के प्रशासन, मारिबोर विश्वविद्यालय और एक सेकंडरी स्कूल के आमंत्रण पर तीन दिवसीय यात्रा पर गए हैं। अपनी यात्रा के दौरान वह मानवता के मसले पर युवा लोगों में व्याख्यान देंगे। लेकिन इस दौरान दलाई लामा के राजधानी जुबलजाना जाने और सरकार के वरिष्ठ नेताओं से मिलने का कोई कार्यक्रम नहीं है।

तिब्बती फिल्म को फ्रेंच फिल्म फेस्टिवल में प्रिक्स ड्यू पब्लिक पुरस्कार

(फायूल डॉट कॉम, पेरिस 11 अप्रैल)

रितु सरीन और तेनजिन सोनम की डॉक्यूमेंट्री फिल्म "द सन बिहाइंड द क्लाउड्स, टिबेट्स स्ट्रगल फॉर फ्रीडम" को पेरिस के दक्षिण में स्थित शहर क्रेटील में शनिवार को आयोजित प्रतिष्ठित 32वें फिल्म्स डी फेम्स वुमेन फिल्म फेस्टिवल में "प्रिक्स डु पब्लिक" यानी पब्लिक च्वाइस अवॉर्ड मिला है। इसके पहले इस फिल्म को मानवाधिकारों के संरक्षण में योगदान के लिए मार्च माह में वाक्लाव हैवेल अवॉर्ड भी मिल चुका है। इसे कैलिफोर्निया के प्रतिष्ठित 21वें वार्षिक पाम स्प्रिंग्स इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में ऑडिएंस डॉक्युमेंटरी फेवरिट अवॉर्ड भी मिल चुका है।

तिब्बत में सीमा पर सख्त नियंत्रण स्थापित कर रहा है चीनः

(एएफपी, 3 अप्रैल, टोक्यो)

तिब्बत से निर्वासित होकर आने वाले तिब्बतियों की संख्या घट रही है क्योंकि चीन सीमावर्ती क्षेत्र में अपने

नियंत्रण को सख्त बना रहा है। तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के एक वरिष्ठ दूत ने यह जानकारी दी है। साल 1959 में अपने हिमालयी मातृभूमि को छोड़कर भारत में बस जाने वाले बौद्ध भिक्षु के मुख्य प्रतिनिधि तेम्पा सेरिंग ने कहा, "आमतौर पर साल 2008 तक हर साल 2,500 से 3,000 लोग तिब्बत से पलायित होकर आते थे। लेकिन मार्च 2008 में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद इस संख्या में गिरावट आई है।"

सरकारी इमारतों से चीन झंडा हटाने के आरोप में तिब्बती युवा पकड़े गए

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 5 अप्रैल)

खम प्रांत के ड्रिरु में एक सरकारी इमारत से झंडा उतारकर उसे जलाने के आरोप में एक तिब्बती युवा को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस क्षेत्र से संपर्क रखने वाले एक निर्वासित तिब्बती नागरिक ने फायूल को यह जानकारी दी है। ड्रिरु परंपरागत रूप से तिब्बत के खम प्रांत का एक जिला हुआ था लेकिन अब इसे तथाकथित तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र नागचू प्रशासन के एक काउंटी में बदल दिया गया है।

ड्रिरु काउंटी के साचू टाउनशिप के तोथो गांव में रहने वाले 22 साल के कुंशोक नामग्याल को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारियों ने दो हफ्ते पहले गिरफ्तार किया है। उसने एक स्थानीय सामुदायिक भवन पर लगा चीनी झंडा उतारा और उसे जला दिया। नागचू के तिब्बती नागरिक नावांग थारपा ने यह जानकारी दी है जो अब निर्वासन में रहते हैं। नावांग ने इस क्षेत्र में मौजूद अपने सूत्रों के हवाले से बताया कि विरोध के इस साहसिक काम के तत्काल बाद नामग्याल को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। उसे कठोर सजा दी जा सकती है। थारपा के अनुसार फिलहाल किसी को भी पता नहीं है कि उसे कहां रखा गया है।

पुलिस ने विरोध प्रदर्शन कर रहे तीन तिब्बती नागरिकों को सरथा में गिरफ्तार किया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 5 अप्रैल)

कार्डजे तिब्बत स्वायत्तशासी प्रशासन के सेरथा काउंटी में चीनी पुलिस ने चीन सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करने के आरोप में 20 साल के एक तिब्बती युवा को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया है। इस क्षेत्र में संपर्क रखने वाले एक निर्वासित तिब्बती नागरिक ने यह जानकारी दी है। सेरथा काउंटी के चोकसांग गांव के उग्येन नामग्याल प्रतिबंधित तिब्बती झंडा लेकर घूम रहा था और उसने तिब्बत की आज़ादी, धार्मिक आज़ादी बहाल करने और निर्वासित तिब्बती नेता दलाई लामा को तिब्बत में वापस बुलाने की मांग की। सूत्रों के अनुसार घटनास्थल पर तत्काल ही चीनी पुलिस आ गई और उसने नामग्याल को गिरफ्तार करने से पूर्व उसे जमकर पीटा। एक दूसरे सूत्र ने बताया कि एक अन्य घटना में चीन सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लारुंग गर बौद्ध संस्थान के दो तिब्बती भिक्षुओं को 31 मार्च को पुलिस हिरासत में ले लिया गया।

नागबा के स्कूल में विरोध प्रदर्षन के लिए 5 गिरफ्तार

(फायूल डॉट कॉम, 6 अप्रैल, धर्मशाला)

नगबा प्रशासन के जोएग काउंटी में चीनी अधिकारियों ने 3 तिब्बती शिक्षकों को गिरफ्तार कर लिया है। तिब्बती भाषा की वेबसाइट वोकार डॉट नेट पर छपी एक खबर में यह जानकारी दी गई है। पुलिस ने एक टीचर ट्रेनिंग स्कूल के परिसर से पांच शिक्षकों सोनम, किर्ती क्याब, तामे, छोफेल और तोल्हा को गिरफ्तार कर लिया है। वेबसाइट के अनुसार इन शिक्षकों ने साल 2008 के विरोध प्रदर्शनों में मारे गए लोगों के प्रति श्रद्धांजलि और पीड़ितों के प्रति अपना समर्थन जताया था जिसकी वजह से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। इस स्कूल में भी 17 मार्च, 2008 को विरोध प्रदर्शन हुए थे जिसके सिलसिले में सोनम से कई बार पूछताछ की गई थी।

2 तिब्बती लेखक लांझू में गिरफ्तार, यूनिवर्सिटी हॉस्टल में छानबीन

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 7 अप्रैल)

चीन ने लांझू के नार्थवेस्ट नेशनल माइनॉरिटीज यूनिवर्सिटी में मंगलवार को दो तिब्बती युवाओं को गिरफ्तार कर लिया है। सूत्रों के अनुसार स्थानीय जन सुरक्षा ब्यूरो के करीब 16 अधिकारी यूनिवर्सिटी हॉस्टल आए और उन्होंने छात्रों के कमरों को छान मारा।

"आमतौर पर साल 2008 तक हर साल 2,500 से 3,000 लोग तिब्बत से पलायित होकर आते थे। लेकिन मार्च 2008 में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद इस संख्या में गिरावट आई है।

(1)

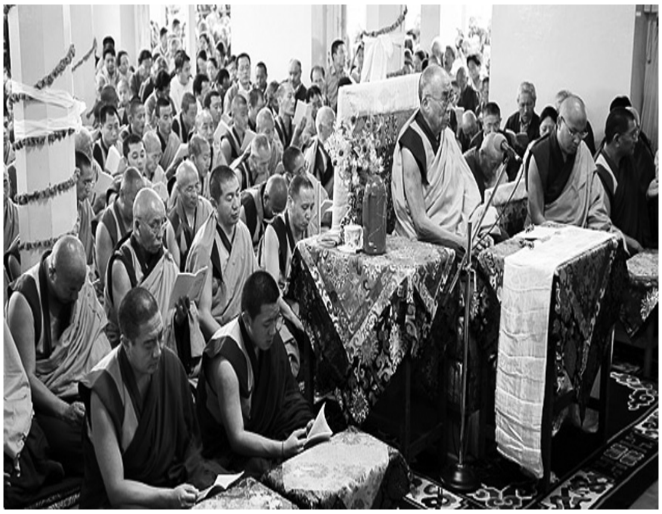

(2)

(10)

कैमरे की आंख

1. परम पावन दलाई लामा ने केगुदो भूकंप पीड़ितों के लिए धर्मशाला के मुख्य तिब्बती
   नेतृत्व किया। इस प्रार्थना सभा में ग्यालवांग कर्मापा (दाएं) और कई अन्य उच्च ला
2. एक समारोह में उपस्थित (बाएं से) कालोन ट्रिपा प्रोफेसर सामदोंग रिनपोछे, हिमाच
   श्रेष्ठ ग्यालवांग कर्मापा और राज्य के उद्योग मंत्री श्री कृष्ण कपूर।
3. बीजिंग के चाइना इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशल स्टडीज में मंगलवार, 6 अप्रैल, 2010
4. बाएं सेः डॉ. कार्टिन हेगेन (स्वर्गीय डॉ. टोनी हेगेन की पुत्री),श्रीमती सिगरिड जॉस
5. 10वें पंचेन लामा लुनड्डुप छोक्यी ग्यालत्सेन के निधन के 20 साल पूरा होने पर धर्मशा
   में एक पुस्तक का लोकार्पण करते हुए परम पावन दलाई लामा
6. जिएगु, युशु काउंटी में भूकंप से ढही एक इमारत के मलबे में चल रहे खोज एवं ब
7. इस तस्वीर में तिब्बत के एक मठ के निकट बनाए गए अस्थायी मुर्दाघर के पास भूकं
   प्रांत में आए जबर्दस्त भूकंप में करीब 1339 लोग मारे गए थे।
8. दिल्ली में दलाई लामा के मुख्य प्रतिनिधि तेम्पा सेरिंग टोक्यो में एक संवाददाता सम्
   भी चीनी शासन के तहत वृहत्तर तिब्बती अधिकारों का आंदोलन जारी रहेगा। फोटो
9. मलबों में दबे लोगों को निकालने में मदद के लिए क्षेत्र के विभिन्न मठों के सैकड़ों
10. तस्वीर में (बाएं से) कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा मंत्री, श्री के एस सुदर्शन जी, श्री

(9)

(8)

(3)

(4)

आंख से तिब्बत

ख्य तिब्बती मंदिर सुगलागखांग में मंगलवार, 27 अप्रैल को एक सामूहिक प्रार्थना सभा का
उच्च लामा एवं निर्वासित तिब्बती सरकार के वरिष्ठ नागरिक शामिल हुए।
छे, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रोफेसर प्रेम कुमार धूमल, परम पावन दलाई लामा, परम

ल, 2010 को भाषण देते हुए भारतीय विदेश मंत्री सोमनहल्ली, मलैया कृष्णा।
रिड जॉस अर्न्ड, परम पावन दलाई लामा और डॉ. आर्थर बिल
पर धर्मशाला के सुगलांगखांग मंदिर में 30 दिसंबर, 2009 को आयोजित एक स्मृति समारोह

ोज एवं बचाव कार्य में सेना के जवानों का साथ देने पहुंचे तिब्बती बौद्ध भिक्षु
पास भूकंप में मारे गए लोगों की सैकड़ों लाशें दिख रही हैं। उत्तर–पूर्व तिब्बत के किगुदो

दाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए। सेरिंग ने कहा कि दलाई लामा के निधन के बाद
गा। फोटो (एएफपी, योशिकाजू सुनो)
के सैकड़ों भिक्षु लगे हुए हैं
जी, श्री इंद्रेश जी और डिप्टी स्पीकर डोलमा ग्यारी

(फोटो परिचय : ऊपर बाएं से घड़ी की दिशा में)

(5)

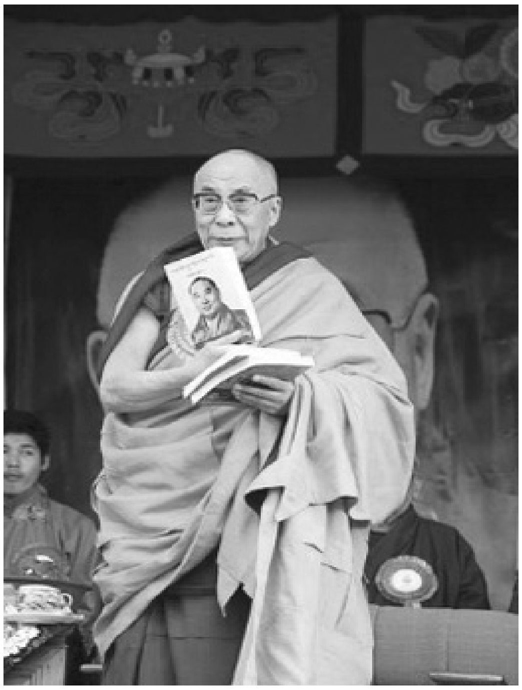

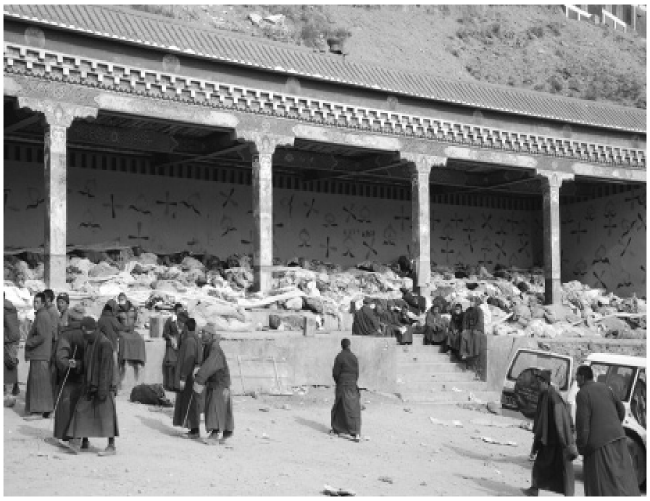

(7)

(6)

ताशी राबटेन

इसके बाद ताशी राबटेन (बुलाने का नाम ते उरांग) और ड्रुकलो (पुकारने का नाम शोकजांग) का गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारियों ने छात्रों के मोबाइल फोन, लैपटॉप, कंप्यूटर और किताबें जब्त कर लीं। अचानक अधिकारियों के कमरों में बिना बताए घुस जाने से छात्र हैरान थे। एक छात्र ने हमारे सूत्र को फोन से बताया, उन्होंने हमारे कमरों, बिस्तर, किताबों और ड्रॉ की तलाशी ली। यहां तक कि वे हमारे स्टडी मटिरियल भी उठा ले गए।

ड्रुकलो

गौरतलब है कि जिस ताशी नाम क युवक को गिरफ्तार किया गया है वह तिब्बत में साल 2008 में हुए विरोध प्रदर्शनों पर आधारित एक साहित्यिक पत्रिका दशार डुंगरी (ईस्टर्न स्नो माउंटेन) का संपादक था। उसने एक कलेक्शन वर्क "रिटेन इन ब्लड" का भी संपादन किया था। उसके निडर लेखन की वजह से ही उसे पिछले साल जुलाई में भी गिरफ्तार किया गया था। उसके सहपाठियों ने बताया, :पिछले साल वह तिब्बत के छात्रों, बुद्धिजीवियों और सामान्य पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ था। उसे एक बेहतरीन और बहादुर युवा चिंतक के रूप में ख्याति मिली थी।

पत्र में युशु के तिब्बतियों ने चीनी नेताओं से मांग की है कि वे दलाई लामा से अपने सभी राजनीतिक मतभेदों को दूर करें और उन्हें भूकंप पीड़ित क्षेत्र में बुलाएं ताकि वे पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना कर सकें।

माचू तिब्बती मिडल स्कूल के छात्रों ने शांतिपूर्ण धरना दिया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 8 अप्रैल)

तिब्बत के गांसू प्रांत जो परंपरागत तौर पर तिब्बत के आमदो प्रांत में आता है) के माचू काउंटी में स्थित तिब्बती मिडल स्कूल के विद्यार्थियों ने सरकारी नियंत्रण के विरोध में एक धरना तिब्बत के गांसू प्रांत (जो परंपरागत तौर पर तिब्बत के आमदो प्रांत में आता है) के माचू काउंटी में स्थित तिब्बती मिडल स्कूल के विद्यार्थियों ने सरकारी नियंत्रण के विरोध में एक और शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया है।

इस क्षेत्र में संपर्क रखने वाले एक निर्वासित तिब्बती ने यह जानकारी दी है। मांचू तिब्बती राष्ट्रीय मिडल स्कूल के विद्यार्थियों ने कई वरिष्ठ विद्यार्थियों के सहयोग से 3 अप्रैल को स्थानीय समयानुसार अपराह्न तीन बजे शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन शुरू किया।

धर्मशाला, भारत में रहने वाले निर्वासित तिब्बती और रिसर्चर डोलकर क्याब ने यह जानकारी दी है जो मूलतः मांचू के ही रहने वाले हैं।

चीन ने न्यागरांग से तिब्बती बौद्ध भिक्षु को गिरफ्तार किया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला)

तिब्बत के परंपरागत खम प्रांत के न्यागरांग काउंटी में चीनी अधिकारियों ने 22 साल के तिब्बती बौद्ध भिक्षु आबो ताशी को गिरफ्तार कर लिया है। ताशी गुरु मठ के भिक्षु हैं। गुरु मठ के 19 वर्षीय सेरिंग ग्यालत्सेन, 22 वर्षीय सेरिंग वांगचुक और जामचोक मठ के रिनजिन दोरजी ने एक विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। चारों लोग मोटरसाइकिल पर सवार होकर तिब्बत का प्रतिबंधित झंडा लहरा रहे थे और दलाई लामा को तिब्बत में वापस लाओ, तिब्बत को आज़ाद करो, तिब्बत से खनिज संसाधनों का दोहन बंद करो जैसे नारे लगा रहे थे।

इस विरोध प्रदर्शन के बाद 500 स्थानीय तिब्बतियों ने इनके समर्थन में विरोध मार्च मार्च निकाला। फिलहाल यह पता नहीं चल पाया है कि आबो ताशी को कहां रखा गया है।

तिब्बत में भूकंप पीड़ित परिवारों ने हू और वेन से दलाई लामा को आमंत्रित करने को कहा

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 17 अप्रैल)

युशु काउंटी के तिब्बती नागरिकों ने चीनी राष्ट्रपति हू जिनताओ और प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ से मांग की है कि वह दलाई लामा को तिब्बत के भूकंप पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करने के लिए बुलाएं। गौरतलब है कि दलाई लामा को चीन अलगाववादी मानता है। चीन में 14 अप्रैल को आए भी ाण भूकंप में सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1144 लोग मारे गए हैं, लेकिन निर्वासित तिब्बती नागरिकों की इस क्षेत्र में मौजूद लोगों से बातचीत से पता चला है कि यह संख्या

काफी ज्यादा हो सकती है। एक वेबसाइट बॉक्सुन डॉट कॉम पर प्रकाशित एक पत्र में युशु के तिब्बतियों ने चीनी नेताओं से मांग की है कि वे दलाई लामा से अपने सभी राजनीतिक मतभेदों को दूर करें और उन्हें भूकंप पीड़ित क्षेत्र में बुलाएं ताकि वे पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना कर सकें।

चीन ने भूकंप राहत में लगे भिक्षुओं को हट जाने का कहा

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 22 अप्रैल)

चीन सरकार ने मठों को आदेश दिया है कि वे युशु काउंटी में राहत एवं बचाव कार्यों में मदद करने वाले अपने भिक्षुओं को वापस बुलाएं। एसोसिएटेड प्रेस की खबर में यह जानकारी दी गई है। युशु काउंटी (तिब्बत के परंपरागत खम प्रांत के क्येगुदो) में गत 14 अप्रैल को 6.9 तीव्रता का भूकंप आया था। भीषण भूकंप में बच जाने वाले लोगों का कहना था कि सबसे पहले तिब्बती भिक्षुओं ने ही पीड़ितों की मदद करने, खाना पहुंचाने, टेंट लगाने, मलबा हटाने और शवों को दफनाने में मदद की थी। एपी के अनुसार, अब सबसे पहले राहत कार्य में लगने वाले इन बौद्ध भिक्षुओं को इस विपदाग्रस्त क्षेत्र से बाहर किया जा रहा है। इनके काम को सरकारी मीडिया भी प्रचारित नहीं कर रही है क्योंकि चीन सरकार इनके नायकत्व और प्रभाव से डरी हुई है।

भूंकप से मरने वालों की संख्या कम बता रहा है चीनः निर्वासित तिब्बती

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 16 अप्रैल)

निर्वासित तिब्बतियों ने दावा किया है कि चीन सरकार तिब्बत के सुदूरवर्ती क्षेत्र क्विंघई प्रांत के युशु प्रशासन के तहत आने वाले युशु काउंटी में आए भूकंप में मरने वालों की संख्या चीन सरकार कम करके बता रही है। चीन सरकार के नवीनतम आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार भूकंप में मरने वालों की संख्या 791 है, जबकि निर्वासित तिब्बतियों ने जब क्येगुदो के लोगों से बात की तो पता चला कि हजारों तिब्बती मारे गए हैं और मरने वालों की संख्या अभी और बढ़ सकती है।

इस क्षेत्र के विभिन्न मठों के सैकड़ों भिक्षु मलबा हटाने के काम में लग गए हैं ताकि इनके नीचे फंसे लोगों को निकाला जा सके। मलबे के नीचे से निकल रही लाशों की भारी संख्या के पास भिक्षुओं को प्रार्थना करते हुए देखा जा सकता है। निर्वासित तिब्बती नागरिक चीन सरकार पर यह आरोप लगा रहे हैं कि वह बचाव प्रयासों को बहुत ज्यादा प्रचारित कर रही है, जबकि मरने वालों की वास्तविक संख्या को छिपा रही है। सरकार ने मौतों के जो आंकड़े बताए हैं, स्थानीय तिब्बती नागरिकों के अनुसार मौत उससे कई गुना ज्यादा हुई है।

11वें पंचेन लामा को रिहा करने की मांग

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 26 अप्रैल)

11वें पंचेन लामा गेंनदुन छोक्यी निमा

तिब्बतियों के लिए गेंनदुन छोक्यी निमा काफी प्रिय हैं और वह निर्विवाद रूप से तिब्बत के परम पावन 11वें पंचेन लामा हैं। पंचेन लामा इस रविवार को 21 साल के हो रहे हैं। लेकिन कोई नहीं जानता कि करीब 15 साल पहले सार्वजनिक जीवन से अचानक गायब हो जाने वाले पंचेन लामा कहां हैं और उनके साथ क्या हुआ। परम पावन दलाई लामा द्वारा निमा को पंचेन लामा का अवतार घोषित करने के तत्काल बाद चीन की कम्युनिस्ट सरकार ने मई 1995 में पंचेन लामा और उनके परिवार का गोपनीय तरीके से अपहरण कर लिया। आज बाहरी दुनिया को पंचेन लामा के बारे में जानकारी उनकी छह साल के अवस्था की एक मात्र फोटो के रूप में ही है।

गेंनदुन छोक्यी निमा के बारे में चीनी अधिकारी कुछ भी बताने से इनकार करते रहे हैं और अब जाकर पिछले महीने तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र के चीन द्वारा नियुक्त गवर्नर पेमा थिनले का इस बारे में बयान आया है। थिनले ने बीजिंग में मार्च माह में आयोजित चीन के वार्िक विधायी सत्र के अवसर पर पत्रकारों से कहा कि युवा बच्चा गेंनदुन तिब्बत में ही कहीं अपने परिवार के साथ रह रहा है और बड़ा अच्छा जीवन गुजार रहा है। हालांकि, उन्होंने इसके बारे में कोई और विवरण नहीं दिया।

कोई नहीं जानता कि करीब 15 साल पहले सार्वजनिक जीवन से अचानक गायब हो जाने वाले पंचेन लामा कहां हैं और उनके साथ क्या हुआ।

दलाई लामा ने समर्थन के लिए स्विट्जरलैंड का धन्यवाद दिया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला 9 अप्रैल)

परम पावन दलाई लामा ने गुरुवार को स्विट्जरलैंड के हाउस ऑफ रीप्रजेंटेटिव्स पास्कल ब्रुडेरर से मुलाकात कर उन्हें इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उनका देश पिछले 50 साल से तिब्बत का समर्थन कर रहा है। इसके बाद दलाई लामा "मर्सी स्विजः थैंकयू स्विट्जरलैंड" उत्सवों में शामिल हुए। इस कार्यक्रम का आयोजन स्विस टिबेटन फ्रेंडशिप एसोसिएशन और तिब्बती समुदाय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। इसमें करीब 400 अतिथि और मीडिया के प्रतिनिधि शामिल हुए।

दलाई लामा, तिब्बत सरकार ने पोलैंड के राश्ट्रपति और उनके सहयोगियों की मौत पर गहरा दुःख व्यक्त किया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 12 अप्रैल)

पोलैंड के राष्ट्रपति काजिनस्की और उनकी पत्नी मारिया

परम पावन दलाई लामा ने पोलैंड के प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क को भेजे एक पत्र में वहां के राष्ट्रपति काजिनस्की की मौत पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए जनता को अपनी शोक संवेदना भेजी है। रविवार को रूस में हुए एक दुःखद विमान दुर्घटना में पोलैंड के राष्ट्रपति, उनकी पत्नी मारिया और 130 अन्य सहयोगियों की मौत हो गई थी। तिब्बती नेता ने उन दिनों को स्मरण किया जब उन्हें अपने पोलैंड दौरे पर राष्ट्रपति काजिनस्की से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दलाई लामा आज़ादी, लोकतंत्र और मानवाधिकार के हितों के लिए स्वर्गीय राष्ट्रपति के समर्पण की प्रशंसा की। इंडो–एशियन न्यूज सर्विस के अनुसार निर्वासित तिब्बती सरकार ने भी पोलैंड के राष्ट्रपति लेक काजिंस्की के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

निर्वासित तिब्बती देंगे हिमाचल राज्य को धन्यवाद

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 26 अप्रैल)

निर्वासित तिब्बती सरकार दलाई लामा के मैक्लोएडगंज में पहुंचने की 50वीं वर्षगांठ पर हिमाचल प्रदेश की जनता और सरकार को धन्यवाद देने के लिए यहां दो दिन के एक समारोह का आयोजन करेगी। तिब्बती जनता की तरफ से हिमाचल प्रदेश की जनता और सरकार के प्रति आभार प्रकट करने के लिए धन्यवाद हिमाचल समारोह का आयोजन इस साल 30 अप्रैल को किया जा रहा है जिस दिन धर्मशाला में परम पावन के कदम पड़े ठीक 50 साल पूरे हो गए हैं। धर्मशाला के पास दारी मेला मैदान में होने वाले इस समारोह में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रोफेसर प्रेम कुमार धूमल और तिब्बती आध्यात्मिक नेता परम पावन दलाई लामा भी मौजूद रहेंगे। इस अवसर पर धर्मशाला के कांगड़ा आर्ट म्यूजियम में महात्मा गांधी और परम पावन दलाई लामा के शांति और भाइचारे के संदेश पर एक फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन हिमाचल सरकार के उद्योग मंत्री श्री कृष्णन कपूर करेंगे।

दलाई लामा ने भूकंप पीड़ितों के लिए सामूहिक प्रार्थना का नेतृत्व किया

(फायूल डॉट कॉम, धर्मशाला, 27 अप्रैल)

परम पावन दलाई लामा ने मंगलवार को यहां के मुख्य तिब्बती बौद्ध मंदिर में तिब्बत में हाल में आए भूकंप के पीड़ितों के लिए सामूहिक प्रार्थना का आयोजन किया। दोपहर में करीब दो घंटे चले इस प्रार्थना सभा में हजारों बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों सहित निर्वासित तिब्बती और गैर तिब्बती लोग भी शामिल हुए। तिब्बत में आए विनाशकारी भूकंप के पीड़ित लोगों के लिए यहां हर हफ्ते एक प्रार्थना का आयोजन किया जा रहा है। चीन के सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस भूकंप में 2000 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। लेकिन भूकंप प्रभावित क्षेत्रों के अपुष्ट सूत्रों के अनुसार मारे गए लोगों की संख्या सरकारी आंकड़ों से कई गुना ज्यादा है। तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुसार किसी व्यक्ति के निधन के बाद लगातार सात हफ्ते तक प्रार्थना की जाती है और इस परंपरा के हिसाब से धर्मशाला में यह दूसरे हफ्ते की प्रार्थना सभा थी।

तिब्बती राष्ट्रीय क्रांति दिवस की 51वीं वर्षगांठ के अवसर पर कशग का बयान

आज (10 मार्च, 2010 को) तिब्बती जनता की चीनी प्रषासन के खिलाफ शांतिपूर्ण क्रांति की 51वीं वर्षगांठ है। इस महत्वपूर्ण दिन कशग तिब्बत के उन बहादुर मर्दों एवं औरतों को अपनी श्रद्धांजलि देता है जिन्होंने आध्यात्मिक एवं सांसारिक उद्देश्य के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। कशग उन तिब्बती भाइयों–बहनों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करता है जिन्हें मौजूदा समय में तिब्बत में प्रताड़ना का शिकार होना पड़ रहा है। ऐसे लोगों के साथ कषग की पूरी शुभकामना और सहानुभूति है।

पिछले साल 10 मार्च के कशग के बयान में हमने विस्तार से इस बात को रेखांकित किया था कि पिछले 50 साल में तिब्बत में सकारात्मक एवं नकारात्मक, दोनों तरह की घटनाएं हुई हैं। तिब्बत के भीतर एवं बाहर रहने वाले सभी तिब्बतियों को काफी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से गुजरना पड़ रहा है और हमारी आध्यात्मिकता, राजव्यवस्था और नस्ल की अपूरणीय क्षति हुई है। दूसरी तरफ, तिब्बत के भीतर रहने वाले सभी आयु वर्ग के तिब्बती हिम्मत और आंतरिक ताकत खोए बिना लगातार इतने सालों से अपने संघर्ष को जिंदा रखे हुए हैं। निर्वासन में रहने वाले हम तिब्बतियों ने भी महान आध्यात्मिक और राजनीतिक उपलब्धि हासिल की है, खासकर तिब्बती आध्यात्मिकता और संस्कृति के संरक्षण एंव प्रचार कार्य में। आज इन सब बातों को याद करते हुए कशग खासकर परम पावन दलाई लामा के प्रति अपनी गहरी कष्तज्ञता व्यक्त करना चाहता है क्योंकि इन सालों में हम जो कुछ भी सकारात्मक परिणाम हासिल कर पाए हैं वह परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व की वजह से ही हो पाया है।

पिछले साल 10 मार्च को राष्ट्रीय क्रांति दिवस से अब तक निर्वासित तिब्बती और उनके प्रशासन ने तिब्बतियों के निर्वासित जीवन के 50 साल पूरा होने और मेजबान देशों के प्रति हार्दिक धन्यवाद देने के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इस कार्यक्रम के एक हिस्से के तहत ही हाल में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन –सीटीए– के कर्मचारियों की एक अनौपचारिक बैठक आयोजित की गई ताकि पिछले अनुभवों से कुछ सबक लिया जाए और भविष्य की योजना के बारे में कुछ विचार सामने लाए जाएं। इस बैठक में जो बातें सामने आईं उनमें प्रमुख यह है कि सीटीए कर्मचारियों ने यह संकल्प दोहराया है कि जब तक तिब्बत मसले का हल नहीं निकल जाता तब तक वे सत्य के लिए संघर्ष, शांति और अहिंसक तरीके से जारी रखेंगे। हमारा यह दृढ़ रूप से मानना है कि तिब्बत के भीतर एवं बाहर रहने वाली विशाल तिब्बती जनसंख्या भी इस गंभीर संकल्प को अपनाएगी।

हमारे लिए स्थायी चिंता की बात यह है कि 10 मार्च 2008 को शुरू हुए गंभीर संकट के बाद से तिब्बत में कोई सकारात्मक बात नहीं हुई है। इसलिए कशग चीन जनवादी गणराज्य से अनुरोध करता है कि वह तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन एवं दमन और कानून की समुचित प्रक्रिया के पालन के बिना तिब्बती लोगों को लंबे समय तक जेल में डाल देने, मौत की सजा सुनाने जैसी अपने अमानवीय और गैरकानूनी कार्यों को तत्काल रोके। कशग चीन सरकार से इस बात के लिए भी जोरदार अपील करता है वे युवा पंचेन लामा गेंदुन छोक्यी निमा सहित सभी निर्दोश तिब्बती कैदियों को रिहा करें। इसके अलावा कशग तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बती नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे अत्यंत संयम और सावधानी से काम लें।

कई साल से जारी वार्ता प्रक्रिया के तहत हमने 31 अक्टूबर, 2008 को चीन के संबंधित अधिकारियों को तिब्बती जनता के लिए वास्तविक स्वायत्तता कायम करने का ज्ञापन दिया था। इस ज्ञापन में हमने तिब्बत के बाहर एवं भीतर रहने वाले तिब्बती नागरिकों की बुनियादी आकांक्षाओं को प्रकट करने के अलावा संविधान में वर्णित राष्ट्रीय क्षेत्रीय स्वायत्तता के प्रावधानों को पूरी तरह लागू करने का अनुरोध किया है। लेकिन चीनी पक्ष ने हमारी

चीन सरकार से इस बात के लिए भी जोरदार अपील करता है वे युवा पंचेन लामा गेंदुन छोक्यी निमा सहित सभी निर्दोश तिब्बती कैदियों को रिहा करें। इसके अलावा कशग तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बती नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे अत्यंत संयम और सावधानी से काम लें।

तिब्बती नागरिकों में हर मामले में गहरे असंतोश और नाराजगी की भावना है चाहे वह धर्म हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था हो, भाषा हो, संस्कृति हो सामाजिक दशाएं। दोनों पक्षों के विचारों में इतना अंतर होने के कारण हमारे लिए यह जरूरी हो गया है कि जमीनी स्थिति का सामूहिक रूप से और सावधानीपूर्वक जायजा लिया जाए ताकि सचाई का पता चल सके।

मांगों को या तो तोड़–मरोड़कर पेश किया या उसकी गलत तस्वीर पेश की। इन मसलों को स्पष्ट करने के उद्‌देश्य से और दो बिंदुओं पर नए अनुरोध के लिए परम पावन दलाई लामा के दूतों ने इस साल बीजिंग का दौरा किया और 30 से 31 जनवरी तक अपने चीनी समकक्षों के साथ नौवें दौर की वार्ता की। वार्ता के इस नवीनतम दौर में परम पावन दलाई लामा के दूतों ने चीन सरकार के सामने विचार के लिए निम्न दो बिंदु रखेः

1. परम पावन दलाई लामा की अंतिम चिंता सिर्फ 60 लाख तिब्बतियों का कल्याण ही है। इस बारे में चीन की केंद्रीय सरकार ने तर्क रखा कि तिब्बत में रहने वाले तिब्बती नागरिक काफी संतुष्टि के साथ सुखी जीवन बिता रहे हैं और तिब्बत में ऐसा कोई मसला ही नहीं है जिसे हल किया जाए। जबकि हमारा मानना है कि तिब्बत में रहने वाले ज्यादातार तिब्बती नागरिकों को काफी कठिनाई से गुजरना पड़ रहा है। तिब्बती नागरिकों में हर मामले में गहरे असंतोश और नाराजगी की भावना है चाहे वह धर्म हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था हो, भाषा हो, संस्कृति हो सामाजिक दशाएं। दोनों पक्षों के विचारों में इतना अंतर होने के कारण हमारे लिए यह जरूरी हो गया है कि जमीनी स्थिति का सामूहिक रूप से और सावधानीपूर्वक जायजा लिया जाए ताकि सचाई का पता चल सके। इसलिए हम चीन सरकार से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि इस तरह की प्रस्तावित जांच इस तरीके से किया जाए ताकि सभी तिब्बती नागरिकों को मन में बिना किसी भय और संदेह के अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिले। यदि इस प्रकार की जांच करने से यह पाया गया कि ज्यादातार तिब्बती यह नहीं मानते हैं कि तिब्बत में कोई समस्या है और वे अपने नियति से पूरी तरह संतुष्ट हैं तो यह अच्छी बात होगी क्योंकि परम पावन दलाई लामा भी तो यही चाहते हैं। तब भविष्य में दोनों पक्षों को तिब्बत के मसले पर किसी तरह के तर्क–वितर्क की जरूरत नहीं रह जाएगी। लेकिन यदि यह पाया गया कि ज्यादातर तिब्बती अपने जीवन से असंतुश्ट हैं तो चीन सरकार को भी यह स्वीकार करना होगा कि तिब्बत में समस्या है और उसे इस समस्या को दूर करने के लिए सामूहिक तरीके से रास्ते और साधन तलाशने के लिए बातचीत शुरू करनी होगी।

2. यह आरोप पूरी तरह गलत है कि समूचे तिब्बती क्षेत्र में तिब्बत में 10 मार्च, 2008 से जारी स्वतः स्फूर्त और शांति पूर्ण विरोध प्रदर्शन परम पावन दलाई लामा या उनके निर्वासित संगठन के उकसाने पर हुआ है।

यह आरोप हमें स्वीकार्य नहीं है। इसलिए शेनझेन में आयोजित औपचारिक बातचीत में समूचे चीनी नेतृत्व को इस बात से अवगत करा दिया गया है। इस वजह से ही सातवें दौर की वार्ता में चीन की केंद्र सरकार ने इस सचाई को स्वीकार किया और अपने रवैए में बदलाव लाते हुए "फोर नॉट टु सपोर्ट" की जगह "थ्री स्टॉप" पर जोर दिया। हालांकि, बाद में चीन फिर पुराने रवैए पर आ गया और हमारे खिलाफ पहले जैसे ही आरोप लगाए जाने लगे। इसलिए चीन सरकार को इस बात का स्पष्टीकरण देना होगा कि उसका नजरिया वैसा ही है जैसा कि सातवें दौर की वार्ता में था या उसके बाद से इसमें बदलाव आया है। यदि नजरिए में कोई बदलाव आया है तो चीन सरकार को तिब्बत के भीतर एवं बाहर की हालात का गहराई से जायजा लेना चाहिए ताकि उस पर लगे आरोपों की सचाई का सही तरीके से पता लग सके। इस तरह की जांच से जो नतीजा निकलता है उसे दोनों पक्षों द्वारा स्वीकार्य होना चाहिए। इसके अलावा हम भी इस बात के लिए तैयार हैं कि यदि हमें अपने नजरिए में कुछ गलत लगता है तो हम उसमें सुधार करेंगे। यदि हमारी बातें कहीं से भी गलत नहीं हुईं तो चीन की केंद्र सरकार को राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर झूठ बोलना और निराधार आरोप लगाना बंद करना होगा और इस मामले में एक स्पष्टीकरण जारी करना होगा।

चीन सरकार ने इन बिंदुओं पर कोई साफ जवाब नहीं दिया है और इसके बाद किसी भी प्रेस वार्ता या बयान में उन्होंने हमारे अनुरोध को सही तरीके

से पेश नहीं किया है। जहां तक हमारी बात है, हम इन दो अनुरोधों पर आगे भी जोर देना जारी रखेंगे जिसे हमने काफी गंभीरता और ईमानदारी से पेश किया है। चीन सरकार के विचारों और कथनी में यदि कोई सचाई है तो उसे इन सबकी जांच करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए।

हम सबको इस तथ्य को साक्षी मानना होगा कि एक बार यदि समुचित तरीके से जांच किया जाता है तो भविष्य में चीजें साफ करने में मदद मिलेगी। इससे सभी को सचाई जानने में आसानी होगी।

पिछले नौ दौर की वार्ताओं में परम पावन दलाई लामा के दूतों ने चीन सरकार से साफ तौर पर यह कह दिया है कि परम पावन के व्यक्तिगत मामलों या उनके साथ रहने वाले कुछ प्रमुख लोगों के मसलों पर कोई बात नहीं होगी। वार्ता प्रक्रिया का एकमात्र एजेंडा 60 लाख तिब्बती जनता के कल्याण पर बातचीत करना था। लेकिन किसी भी वार्ता में चीनी पक्षों ने इन मसलों पर बात नहीं की, बल्कि वे परम पावन से जुड़े व्यक्तिगत मसले उठाते रहे। हमने पहले ही इस बात को पूरी तरह साफ कर दिया था और आज भी हम इस बात को दोहराना चाहते हैं। इसलिए चीन सरकार अपने आधिकारिक बयानों में कही गई यह बात पूरी तरह गलत है कि वे वार्ता प्रक्रिया में केवल परम पावन के व्यक्तिगत मामलों पर बातचीत के लिए शामिल हुए थे न कि तिब्बती जनता के कल्याण की बातचीत के लिए। यह बात वास्तव में अप्रासंगिक है। हालांकि, हमारे इस दृढ़ नजरिए में कोई अंतर नहीं आया है कि जब तक तिब्बत मसले का हल नहीं हो जाता चीन सरकार के साथ बातचीत जारी रखेंगे, लेकिन कशग इस बात पर जोर देना चाहता है कि वार्ता प्रक्रिया का एजेंडा सिर्फ 60 लाख तिब्बती जनता के कल्याण की बात होनी चाहिए न कि कुछ और। इसलिए हम इस बात को फिर से दोहराना चाहेंगे कि परम पावन दलाई लामा के व्यक्तिगत कल्याण पर बात करने की जरूरत नहीं है।

तिब्बत समस्या को एक घरेलू मामला समझते हुए जिसका समाधान चीन जनवादी गणतंत्र के ढांच में ही होना चाहिए, हमने हमेशा चीन की केंद्र सरकार से संपर्क बनाए रखा। लेकिन चीनी पक्ष लगातार परम पावन दलाई लामा और तिब्बत के मसले पर बात करता रहा। यही नहीं, इन मसलो के बारे में हर जगह भारी दबाव बनाया गया, चाहे वह दूसरे देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध हो या कोई अंतरराष्ट्रीय मंच। हम सबसे के सामने यह बात साफ हो चुकी है कि यही वजह है जो तिब्बत के मसले को अंतरराष्ट्रीय बना रहा है।

हमारा संघर्ष सत्य और अहिंसा पर आधारित है। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि तिब्बत के भीतर एवं बाहर रहने वाले सभी तिब्बती नागरिक अहिंसा के उस रास्ते में पूरा भरोसा रखते हैं, जो हमने चुना है और जिस पर हम चल रहे हैं, तो तिब्बत के सत्य की जल्द ही जीत होगी। आज न्याय चाहने वाले देशों की संख्या बढ़ती जा रही है, लोगों के साथ ही धार्मिक एवं राजनीतिक नेता तिब्बत के मसले पर गहरी दिलचस्पी और समर्थन व्यक्त कर रहे हैं। मुख्य भूमि चीन और विदेश में रहने वाले बहुत बड़ी संख्या में चीनी बुद्धिजीवी अब परम पावन दलाई लामा की मध्यम मार्ग नीति की तारीफ करने लगे हैं। इसके अलावा तिब्बत में चीन सरकार की गलत नीतियों का सच इन दिनों ज्यादा सुस्पष्ट तरीके से दिखने लगा है। दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद मध्यम मार्ग नीति से किसी एक की विजय और दूसरों के लिए हार होने का मसला ही नहीं है। दुनिया के सभी लोगों में स्वीकार्य इस नीति को अमेरिका और अन्य समान विचारों वाले देशों का मजबूत समर्थन हासिल है। तिब्बत के भीतर रहने वाले तीनों क्षेत्रों के बुद्धिजीवी भी इस नीति की तारीफ एवं समर्थन कर रहे हैं। इस प्रकार तिब्बत के मसले पर तात्कालिक और दीर्घकालिक फायदों वाले महान परिणाम हासिल हुए हैं और हो रहे हैं। ऐसी अच्छी नीति तैयार करने के लिए परम पावन दलाई लामा के प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कशग परम पावन को यह वचन देता है कि हम अपने मन में बिना किसी संदेह के भविष्य में भी इस नीति पर चलते रहेंगे।

पिछले 60 साल से जारी अकल्पनीय अत्याचार और क्रूरता भी तिब्बती जनता के हिम्मत और

चीन सरकार अपने आधिकारिक बयानों में कही गई यह बात पूरी तरह गलत है कि वे वार्ता प्रक्रिया में केवल परम पावन के व्यक्तिगत मामलों पर बातचीत के लिए शामिल हुए थे न कि तिब्बती जनता के कल्याण की बातचीत के लिए।

हालांकि, तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बतियों के लिए खुलकर बाहर आ पाना और इन दिवसों को मना पाना काफी कठिन है, फिर भी हमारा मानना है कि वे दिल और दिमाग से हम निर्वासित तिब्बतियों के साथ उत्सवों में शामिल होंगे।

दृढ़ता को कमजोर करने में सक्षम नहीं हुई है। तिब्बती जनता के इस हिम्मत और एकता को नष्ट करने के लिए चीन सरकार धोखा और धन के इस्तेमाल की अपनी रणनीति को और तेज कर रही है। कशग का यह मानना है कि तिब्बती जनता चीन के इन धोखेबाज नीतियों के आगे नहीं झुकेगी। काफी लंबे समय से अब तक तिब्बती लोगों में बनी एकता साल 2008 के चर्चित जनज्वार के बाद और मजबूत हुई है। कशग सभी तिब्बती नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे एकता के इस बंधन को और मजबूत करने के लिए प्रयास करें और दूसरे पक्ष द्वारा हम तिब्बतियों को बांटने के लिए उकसाने वाली कार्रवाई या अन्य तरह की साजिश से दूरी बनाए रखें। कशग यह भी अनुरोध करना चाहता है कि हम तिब्बतियों को छोटे–छोटे मसलों पर आंतरिक झगड़ों में उलझने के प्रति सावधान रहना चाहिए। तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बतियों को दो महत्वपूर्ण मसलों पर गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए; पहला, तिब्बती युवाओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे परंपरागत और आधुनिक, दोनों तरह की शिक्षा पर ध्यान देते हुए और अपने अध्ययन के क्षेत्र में पेशेवर और विशेष कौशल हासिल करते हुए अपने शैक्षणिक क्षितिज का विस्तार करें। दूसरा, तिब्बत के पठार के पर्यावरण को और नुकसान न पहुंचे इसके लिए हर संभव रास्तों और साधनों का इस्तेमाल करे। ये ऐस गैर राजनीतिक मसले हैं जिनसे तिब्बतियों और चीनी, दोनों नागरिकों के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक फायदे जुड़े हुए हैं। इसलिए दोनों पक्षों के लिए यह काफी महत्वपूर्ण है कि इन मसलों पर कार्य के लिए सामूहिक प्रयास करें। इसी प्रकार, हर व्यक्ति को परम पावन दलाई लामा के उन सलाहों पर चलने का अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए जो वह दुनिया के लोगों और खासकर तिब्बती नागरिकों को देते हैं। उनके सलाह आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों तरह के होते हैं जिनका सिर्फ इस जन्म से नहीं बल्कि अगले कई जन्म से नाता है। फिलहाल कई प्रशासनिक इकाइयों में बंटे हुए तिब्बती नागरिकों को यदि एक स्वायत्त प्रशासनिक इकाई के तहत लाया जाए तो यह एक ऐसी एकसमान नीति को लागू करने में मददगार होगा जिससे शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में एकसमान विकास किया जा सकेगा। इससे खासकर तिब्बत की विशिष्ट संस्कृति की रक्षा हो सकेगी। सभी तिब्बती नागरिकों को एक प्रशासनिक इकाई के तहत लाने का अनुरोध चीन सरकार से 1951 से ही बार–बार किया जाता रहा है।

हाल में आयोजित तिब्बत पर पांचवें वर्क फोरम में सभी तिब्बती क्षेत्रों के प्रतिनिधियों को सभी तिब्बती नागरिकों के एक समान विकास योजना पर चर्चा करने के लिए बुलाया गया था। इस फोरम ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि जहां तक जीवन स्तर का संबंध है, सभी तिब्बती नागरिक और खासकर किसान एवं पशुपालक काफी पिछड़ रहे हैं। हमें इन घटनाओं का निश्चित रूप से ध्यान रखना चाहिए। हम इस बात की राह देख रहे हैं कि चीन सरकार वास्तव में सभी तिब्बती आवासीय क्षेत्रों के लिए एक समान विकास कार्यक्रम लागू करे।

परम पावन दलाई लामा 6 जुलाई, 2010 को 75 साल के हो रहे हैं। कशग की योजना उनके इस आने वाले जन्म दिन को ज्यादा भव्य तरीके से मनाने की है और कई बड़े आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसी प्रकार निर्वासन में हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के भी इस साल 2 सितंबर को 50 साल पूरे हो रहे हैं। हमारी योजना इस दिवस को भी उत्साह के साथ मनाने की है। हमें उम्मीद है कि सभी तिब्बतियों को इन आने वाले दिवसों का ध्यान रहेगा। हालांकि, तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बतियों के लिए खुलकर बाहर आ पाना और इन दिवसों को मना पाना काफी कठिन है, फिर भी हमारा मानना है कि वे दिल और दिमाग से हम निर्वासित तिब्बतियों के साथ उत्सवों में शामिल होंगे। अंत में कशग परम पावन दलाई लामा के दीर्घायु होने और उनकी सभी मनोकामनाएं सहज रूप से पूरा होने के लिए प्रार्थना करता है। तिब्बत मसले के सच की जल्दी ही जीत हो!

कशग